विद्या आश्रम

सा 10/82, अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी-221007

आश्रम समिति (न्यास) की ऑनलाइन बैठक

15 मार्च 2022

दोपहर 3.30 से 6.00 बजे तक

कार्यवाही

उपस्थित सदस्य : जे.के. सुरेश, बी. कृष्णराजुलु, जी. सिवराम कृष्णन, अमित बसोले, ललित कौल, मोहन राव, नरेश शर्मा, गिरीश सहस्रबुद्धे, अभिजित मित्रा, अवधेश कुमार, अविनाश झा, लक्ष्मण प्रसाद, विनोद कुमार, एहसान अली, मु. अलीम, प्रेमलता सिंह, चित्रा सहस्रबुद्धे और सुनील सहस्रबुद्धे.

आमंत्रित व्यक्ति : कृष्ण गाँधी.

कार्यवाही : विद्या आश्रम के अध्यक्ष सुनील सहस्रबुद्धे की अध्यक्षता में बैठक शुरू हुई. पहले से तैयार किये और सभी सदस्यों को भेजे गये एजेंडा पर क्रमवार चर्चा की गई और सर्वसहमति से निर्णय लिए गये, जिन्हें नीचे दिया जा रहा है.

1. **अंतर्राष्ट्रीय स्थिति :** इस सदी के शुरुआती वर्षों से ही अमेरिका ने अपने साम्राज्य निर्माण की दिशा में जो युद्ध किये उनके चलते जिस राजनीति ने आकार लिया उसे हाल के रूस-यूक्रेन युद्ध ने नया मोड़ दे दिया है. इस युद्ध के बाद सभ्यतागत-राज्य के निर्माण की एक नई अवधारणा चर्चा में आ रही है. औद्योगिक युग में जिस आधुनिक-राज्य की व्यवस्था को दुनिया भर के देशों में स्थापित किया गया उसे यह पहला बड़ा धक्का लगा है. रूस के राष्ट्रपति ने इस युद्ध को रूसी सभ्यता के पुनर्निर्माण का युद्ध कहा है. उनके बयानों में पश्चिमी देशों की कड़ी आलोचना मात्र राजनीतिक मुद्दों तक सीमित नहीं है बल्कि सामाजिक, वैचारिक, शिक्षागत-सार और सांस्कृतिक ज्यादतियों को घेरती है. लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि रूस पूँजीवाद के नए अवतार को चुनौती दे रहा है. क्योंकि पुतिन के बयानों में रूसी सभ्यता को ख़त्म करने में लेनिन को दोषी भी कहा गया है और देश में लेनिन के स्मारकों को तोड़ने की घटनाएँ भी हो रही हैं. अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति ट्रम्प ने यूक्रेन पर आक्रमण की पुतिन की पहल का सबसे पहले अभिनन्दन किया. दुनिया की दक्षिणपंथी ताकतों द्वारा रूस के कदम की सराहना हो रही है. हमारे देश की दक्षिणपंथी ताकतें उनसे अलग नहीं हैं. ऐसे में लगता है सभ्यतागत या एक तरह के नस्लीय-राज्य के उदय की ओर दुनिया बढ़ रही है. राष्ट्रों की सरहदों के पुनर्निर्माण के युद्ध सामान्य जनता पर थोपे जायेंगे और इतिहास से गड़े मुर्दों को निकालकर नये-नये बहानों के मार्फ़त कलह, संघर्ष और युद्ध की स्थितियों को बनाने

और बनाये रखने की नई राजनीति आकार लेगी. ऐसे में लोकविद्या दर्शन और लोकविद्या जन आन्दोलन की भूमिका पर विचार ज़रूरी है.

चर्चा में सभी ने भाग लिया और यह निकल कर आया कि अभी तक इस सभ्यतागत राष्ट्र-राज्य की परिकल्पना में ज्ञानगत आधार में किसी बदलाव के संकेत नहीं नज़र आ रहे हैं. लेकिन सूचना-प्रौद्योगिकी के नए साधनों के तीव्र विकास से साइंस-पूँजी-राज्यसत्ता के गठबंधन अधिक मज़बूत होंगे ऐसा प्रतीत होता है. ये प्रक्रिया साम्राज्य के फैलाव और इजारेदारी की प्रवृत्तियों को अधिक आक्रामक रूप देंगी. लोकविद्या-समाजों को केंद्र में रखते हुए लोकविद्या जन आन्दोलन और विद्या आश्रम के कार्यों को आकार देना चाहिए. चर्चा में कुछ सुझाव आये जैसे क्षेत्रीय आंदोलनों पर अधिक ध्यान दिया जाये, इतिहास की निरंतरता में लोकविद्या समाजों की एक नई पहचान बनाने की ओर बढ़ा जाये, जीवन को कैसे जिया जाना चाहिए और लोकविद्या धर्म के रूप और मूल्य क्या हों इस पर गहराई से विचार हो, आदि और आज के किसान आन्दोलन के उजाले में इन सभी सवालों पर विचार कर विद्या आश्रम का कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए.

2. **वर्ष 2021-22 में कार्यों की रपट :** इस वर्ष लोकविद्या जन आन्दोलन और लोकपक्ष की पहल के तहत लिए गए कार्यक्रमों की संक्षेप में रपट पेश की गई. लोकविद्या जन आन्दोलन के तहत किसान आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी के साथ ज्ञान के सवाल को प्रमुख बनाने के प्रयास रहे. इसी के तहत ज्ञान-आय-रोज़गार के मुद्दे और न्याय-त्याग-भाईचारा के मूल्यों की शक्ति और लोकविद्या-समाज में इनकी सशक्त उपस्थिति पर कार्य और विचारों को आकार दिया गया. लोकविद्या सत्संग, ज्ञान-पंचायत और लोकपक्ष की पहल के तहत 'समाजों की कहानी समाजों की जुबानी' कार्यक्रम चलाये गए. एक विस्तृत नोट सभी सदस्यों को बैठक के पहले ही भेजा गया, जो यहाँ भी संलग्न है.
3. **कार्यकारिणी की बैठकें :** इस वर्ष विद्या आश्रम कार्यकारिणी की दो बैठके हुई. एक 25 अगस्त 2021 को और दूसरी 22 फरवरी 2022 को. कार्यकारिणी बैठकों में लिये गए निर्णयों से सभी सदस्यों को अवगत कराया गया. इनमें इस वर्ष शुरू हुए फेलोशिप्स के कार्यक्रम को आगे जारी रखने का निर्णय महत्वपूर्ण रहा.
4. **आगामी वर्ष 2022-23 के लिये विद्या आश्रम का प्रस्तावित कार्यक्रम :** ऐतिहासिक किसान आन्दोलन ने देश को और रूस-यूक्रेन युद्ध ने दुनिया को हिला कर रख दिया है. सभ्यतागत राज्यसत्ता को चुनौती लोकविद्या आधारित राज्यसत्ता ही दे सकती है और किसान आन्दोलन ने इसके लिये ज़मीन भी तैयार कर दी है. ऐसे में इस वर्ष 'लोकविद्या आधारित स्वराज' की कल्पना पर कार्य एक महत्वपूर्ण कार्य के रूप में रखा जाना चाहिए. प्रस्ताव रखा गया कि **लोकविद्या जन आन्दोलन के कार्यों को आकार देने के कार्य जारी रहने चाहिए साथ ही वाराणसी ज्ञान पंचायत की तर्ज़ पर नागपुर, बंगलुरु, हैदराबाद और इंदौर में ज्ञान पंचायतें बनाने की तैयारी हो.** इन ज्ञान पंचायतों में स्थानीय ज्ञान के बल पर उत्पादन, बाज़ार, प्रशासन, शिक्षा, चिकित्सा आदि पर लोकविद्या दृष्टि से वार्ता की पहल ली जाये. **'समाजों की कहानी समाजों के ज़ुबानी' को अधिक गंभीरता और गहराई**

से करने के लिए विद्या आश्रम को इस वर्ष शोध की एक कार्यकारी पहल लेनी चाहिए. साथ ही **'स्वराज पंचायत' के नाम से स्वशासन की व्यवस्थाओं और विचारों पर शोध और रचना के काम शुरू होने चाहिए. इन सभी कार्यों को संत परम्परा, किसान आन्दोलन, लोकविद्या-समाज और सामान्य जीवन के मज़बूत खम्भों पर आकार देने की कोशिश हो. यह उम्मीद है कि इन खम्भों के आधार पर निर्मित दर्शन और सामाजिक-नैतिक मूल्य हमें स्वशासन और स्वराज की व्यवस्थाओं और उनके सञ्चालन के समयानुकूल नये तरीकों को समझने और आकार देने के रास्ते खोलेंगे.**

5. **वित्त :** वर्ष 2020-21 की ऑडिट रिपोर्ट पेश की गई जिसका बैठक ने अनुमोदन किया. वर्ष 2021-22 में फरवरी तक के अनुदान और खर्च का एक ब्यौरा प्रस्तुत किया गया.

अभिवादन के साथ बैठक समापित हुई.

●